E-Learning material prepared by Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi, Assistant Professor, Department of Sanskrit, Dr. Shyama Prasad Mukherjee University, Ranchi

मालतीमाधव

डा० धनञ्जय वासुदेव द्विवेदी

सहायक प्रोफेसर, संस्कृत विभाग,

डा० श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय, राँची

भवभूतिकृत मालतीमाधव 10 अंकों का प्रकरण है। इसकी कथा बृहत्कथा से ली गई है। इसमें मालती और माधव तथा मकरन्द और मदयन्तिका के प्रणय और परिणय का वर्णन है। अंकानुसार कथा इस प्रकार है- (अंक १) माधव विदर्भराज के मन्त्री देवराज का पुत्र है और मालती पद्मावतीनरेश के मन्त्री भूरिवसु की पुत्री है। दोनों मन्त्रियों ने पहले से निर्णय कर रखा था कि वे अपने पुत्र और पुत्री का विवाह कर देंगे। नन्दन, जो पद्मावती नरेश का नर्मसचिव है, मालती पर आसक्त है और राजा की सहायता से मालती से विवाह करना चाहता है। मदयन्तिका नन्दन की बहिन और मालती की सखी है। वह माधव के मित्र मकरन्द की प्रेमिका है। कामन्दकी दोनों मन्त्रियों की मित्र है और चाहती है कि मालती और माधव का विवाह निर्विघ्न हो जाए। कामन्दकी संन्यासिनी हो गई है और सौदामिनी तथा अवलोकिता दोनों उसकी शिष्याएँ हैं। मदनोद्यान में माधव और मालती एक दूसरे को देखकर मुग्ध हो जाते हैं। मकरन्द और मदयन्तिका के प्रणय की भी सूचना मिलती है। नन्दन भी मालती से विवाह के लिए राजा से प्रार्थना करता है । (अंक २) राजा के आदेशानुसार भूरिवसु मालती का विवाह नन्दन से करने को उद्यत है। कामन्दकी मालती को तैयार कर लेती है कि वह माधव से गुप्त रूप से गन्धर्व विवाह कर ले। (अंक ३) कामन्दकी के प्रयत्न से मालती और माधव शिवमन्दिर के कुञ्ज में मिलते हैं। वहीं आई हुई मदयन्तिका पर शेर आक्रमण करता है; मकरन्द शेर को मार देता है; किन्तु घायल होकर अचेत हो जाता है। (अंक ४) होश में आने पर मकरन्द मदयन्तिका को देखकर उस पर मुग्ध हो जाता है। नन्दन और मालती के विवाह का निर्णय हो गया है और तदर्थ मदयन्तिका को बुलाया जाता है। निराश मानव सिद्धि के लिए श्मशान घाट का आश्रय लेता है। (अंक ५) अघोरघण्ट की शिष्य कपालकुण्डला बलि के लिए मालती को लाती है। वध्यस्थल पर संयोगवश माधव पहुँच जाता है और अधोरघण्ट को मारकर मालती को बचाता है। (अंक ६) कपालकुण्डला गुरु के वध की प्रतिज्ञा

करती है। मालती और नन्दन के विवाह की तैयारी होती है। षड्यन्त्र द्वारा मालती-वेषधारी मकरन्द से नन्दन का विवाह हो जाता है। उधर कामन्दकी मालती और माधव का गान्धर्व-विवाह करा देती है। अंक (७) सुहागरात के समय मालती-वेषधारी मकरन्द अपने पति नन्दन की ठुकाई करता है। उलाहना देने के लिए आई हुई मदयन्तिका को मकरन्द अपनी वास्तविकता प्रकट करता है और दोनों मालती-माधव से मिलने के लिए उद्यान की ओर जाते हैं। (अंक ८) लड़की भगाने के आरोप में पुलिस वाले मकरन्द को पकड़ते हैं। सूचना पाकर माधव भी वहाँ आ जाता है और दोनों मिलकर सिपाहियों को परास्त करते हैं। उनकी वीरता से प्रसन्न होकर राजा उन्हें अभयदान देता है। लौटने पर उन्हें मालती गायब मिलती है। उसे कपालकुण्डला भगा ले गई है। (अंक ९) सौदामिनी मालती को बचा लेती है और उसे माधव से मिला देती है। (अंक १०) मालती के शोक में भूरिवसु, कामन्दकी, मदयन्तिका आदि आत्मघात के लिए तैयार हैं। मालती माधव के जीवित होने की सूचना देकर सौदामिनी और मकरन्द उन्हें बचाते हैं। राजा की आज्ञा से मकरन्द और मदयन्तिका का विवाह हो जाता है । कामन्दकी की योजनाएं सफल होती हैं।

मालतीमाधव महाकवि भवभूति का प्रथम नाटक है। इसमें गद्य और पद्य दोनों में पाण्डित्य-प्रदर्शन का प्रयत्न किया गया है। लम्बे-लम्बे गद्य-सन्दर्भ कादम्बरी का स्मरण दिलाते हैं। ये सन्दर्भ नाटकीय दृष्टि से अत्यन्त अनुपयुक्त हैं, तथापि भवभूति के पाण्डित्य की धाक जमाने में सहायक सिद्ध हुए हैं। भवभूति ने काव्य नहीं लिखा है, अतः उसने नाटक को काव्यात्मक नाटक का रूप दे दिया है। श्लोकों में नाटकोपयोगिता कम, कवित्व अधिक है। भवभूति प्रकरण के लिए मृच्छकटिक के ऋणी हैं। कथानक के लिए कालिदास के भी ऋणी हैं। मृच्छकटिक में विदूषक है; हास्यरस है; जीवन का व्यावहारिक पक्ष है तो मालतीमाधव में विदूषक का अभाव है; गंभीरता है; जीवन का गंभीर पक्ष है। भवभूति ने कथा संयोजन में कुछ नवीनताएँ प्रस्तुत की हैं- यथा पुरुष पात्रों का स्त्री बनना, दो युवकों का विवाह; संन्यासी और संन्यासियों का तिकड़मी होना; नरबलि की प्रथा; अदृष्ट की प्रधानता; योग-विद्या के आश्चर्यजनक प्रदर्शन; उपकथानक का समावेश; मुख्य कथानक से उपकथानक को अनुचित महत्त्व देना। मुख्य कथा वस्तुतः ८ अंक पर ही समाप्त हो जाती है, किन्तु प्रकरण के १० अंक पूरा करने के लिए २ अंक खींचतान कर बढ़ाए गए हैं। कापालिक प्रकरण अनावश्यक अंग है। कथा

उलझी हुई है; प्रवाह न्यून है; कार्य-शिथिलता है; आश्चर्यजनक घटनाओं का बाहुल्य है। इसमें गौडी शैली का आश्रय लिया गया है। स्थान स्थान पर सुभाषित, अर्थगौरव वाले पद्य, अन्तः प्रकृति और बाह्य प्रकृति का विश्लेषण, मनोवैज्ञानिक चित्रण, सालंकार भाषा, माधुर्य और ओजगुणों का प्राधान्य मिलता है। भाषा लम्बे समासों और जटिल शब्दों से बोझिल है। भवभूति कठिन से कठिन छन्दों के प्रयोग में दक्ष हैं। साथ ही भावानुकूल सरल से सरल छन्दों की रचना में भी उतने ही सिद्धहस्त हैं।

मालती माधव में भवभूतिकालीन समाज और संस्कृति का चित्रण मिलता है। उस समय संन्यासियों का स्तर गिर गया था। वे सांसारिक मामलों में रुचि रखते थे। प्रेमी-प्रेमिकाओं के विवाहादि-सम्बन्धी कार्यों, षड्यन्त्रों, योग-साधनाओं और शक्तियों का दुरुपयोग भी करते थे। तान्त्रिक प्रथाओं का प्रचलन था। नरबलि भी होती थी। पुत्र-पुत्रियों के विवाह का वाग्दान बचपन से ही हो जाता था। एक कन्या के कई प्रेमी हो जाते थे, जो संघर्ष में जीतता वह विवाह करता था। सामाजिक जीवन में भी कूटनीति स्त्री बनकर विवाह षड्यन्त्र करते थे और बाद में धोखा देते थे। वैवाहिक सम्बन्धों के निर्णय में राजा भी अपने पद का दुरुपयोग करते थे। समाज का सामान्य स्तर बहुत उच्च नहीं था। मालती माधव में जिस समाज का चित्रण हुआ है, वह षड्यन्त्रपूर्ण, स्वार्थनिष्ठ और दैवी चमत्कारों पर प्रस्थायुक्त है। मालती माधव का समाज बहुत अंश तक सार्वभौम और सार्वकालिक है। आ गई थी।

मालती माधव में उन्होंने अपने आपको वेद, उपनिषद्, सांख्य, योग आदि का विद्वान् कहा है। इस नाटक में उन्होंने अपने आपको 'पदवाक्यप्रमाणज्ञ' कहा है, जिसका अभिप्राय है कि वे व्याकरण, मीमांसा और न्यायशास्त्र के विद्वान् थे।